रूत

1 [1] जिन समयों में इस्राएल में न्यायी लोगों का राज्य था,
उन दिनों में एक बार अकाल पड़ा। कठिन परिस्थितियों
के कारण यहूदा के बेतलेहम का एक आदमी अपनी पत्नी और
दोनों बेटों को अपने साथ लेकर मोआब देश आ पहुँचा। [2] इस
आदमी का नाम एलीमेलेक, पत्नी का नाम नाओमी और बेटों
का महलोन तथा किल्योन था। ये लोग यहूदा के बेतलेहम
के निवासी थे। [3] वहीं नाओमी के पति एलीमेलेक का देहान्त
हो गया। [4] बेटों में से एक ने मोआबिन लड़की से शादी कर
ली। वहाँ लगभग दस साल तक वे लोग रहे। नाओमी की
एक बहू का नाम ओर्पा दूसरा का रूत था। [5] कुछ समय बाद
महलोन और किल्योन भी चल बसे। [6] मोआब में रहते नाओमी
ने सुना कि याहवे ने अपने प्रजा के लोगों को उनकी ज़रूरत
की चीज़ें मुहय्या करायी हैं इसलिए उस ने वापस लौटने का
कदम उठाया। [7] अपनी दोनों बहुओं के साथ यहूदा देश जाने
के लिए वह निकल पड़ी [8] नाओमी ने अपनी बहुओं से कहा,
"तुम अपने-अपने मायके लौट जाओ। जिस तरह से तुम ने मेरे
साथ प्रेम जताया है, उसी तरह परमेश्वर तुम पर अपनी कृपा
दिखाए।" [9] उस ने कहा, "याहवे तुम्हें फिर से पति दें, जिनके
घरों में तुम्हें सुख मिले।" नाओमी ने उन्हें चूमा और वे सब
ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। [10] बहुओं ने कहा "चाहे कुछ भी हो
जाए, हम आपके लोगों के पास ही चलेंगे। [11] नाओमी बोले,"
मेरी बेटियो, तुम लोग वापस जाओ, क्योंकि मेरे पास अब
और बेटे नहीं हैं, जो तुम्हारे पति बन सकें। [12] मेरे लिए यह
संभव नहीं कि मैं शादी करूँ और मेरे बेटे हों। तुम्हारे लिए
भी यह मुमकिन नहीं है कि तुम उन के सयाने होने तक का
इन्तज़ार करो और मेरे बेटे हों। [13] लेकिन उस हालत में भी
क्या तुम इन्तज़ार करती। मेरी बेटियो, मेरी मानसिक पीड़ा,
तुम्हारी पीड़ा से कहीं ज़्यादा है। देखो, याहवे तो मेरे विरोध में
हैं। [14] ओर्पा ने अपने सास को चूमने के बाद अलविदा किया।
लेकिन रूत, नाओमी के साथ ही रह गयी। [15] तब नाओमी
रूत से बोली,"रूत, देखो ओर्पा तो वापस अपने मायके चली
गयी है, इसलिए तुम भी ऐसा ही करो। अपने लोग और
देवताओं के पास वापस चली जाओ। [16] रूत ने जवाब दिया
"आप ऐसा न कहें, आप जहाँ जाएँगी , मैं भी साथ आऊँगी।
जहाँ आप रहेंगी, मैं भी रहने को तैयार हूँ। आपके परमेश्वर
ही को मैं मानूँगी। [17] जहाँ आप मरेंगी, मैं मरूँगी और वहीं
मुझे दफ़नाया जाएगा। मौत के अलावा यदि किसी और
कारणवश यदि मैं आप से अलग हो जाऊँ, तो याहवे मुझे सज़ा
दें।" [18] रूत के ज़िद्द पकड़ लेने के बाद नाओमी उस से कुछ न
बोली। [19] वहाँ से निकलकर वे दोनों बेतलेहम पहुँची। वहाँ के
निवासियों में धूम मच गयी और नाओमी के बारे में चर्चा भी
होने लगी। [20] नाओमी बोल उठी, "अब मेरा नाम नाओमी
नहीं है, अब मेरा नाम मारा है, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बहुत
दुख दिया है। [21] मैं बहुतायत का जीवन जी रही थी, लेकिन
याहवे ने मुझे कंगाल कर दिया है। इसलिए जब याहवे ही मेरे
खिलाफ़ हैं और दुख दे रहे हैं तो फिर तुम मुझे पुराने नाम से
क्यों पुकार रहे हो ?" [22] नाओमी और रूत बेतलेहम में जौ की
फ़सल की कटाई के समय वहाँ पहुँचे थे।

2 [1] नाओमी के पति एलीमेलेक के घराने में बोअज़ नाम का
एक अमीर कुटुम्बी था। [2] रूत ने नाओमी से कहा, "मुझे
किसी खेत में जाने की अनुमति दे दो। यदि किसी की कृपा
दृष्टि मुझ पर हो जाए तो उसके पीछे-पीछे मैं सिला बिनती
जाऊँगी। नाओमी ने उसे अनुमति दे भी दी। [3] इसलिए वह खेत
में काम करने वालों के पीछे बिनने लगी। जिस खेत में वह गयी
थी, वह एलीमेलेक के सम्बन्धी बोअज़ ही का था। [4] बेतलेहम
से आकर काम करने वालों से बोअज़ कहने लगा,"तुम्हारे संग
याहवे रहें।" उन लोगों ने कहा, "याहवे की आशीष तुम पर
रहे।" [5] तब बोअज़ ने मजदूरों के ऊपर काम करने वाले नौकर
से पूछा कि वह किसकी लड़की है। [6] उस ने उत्तर दिया, "वह
मोआबिन लड़की है जो रूत के साथ मोआब देश से आयी है।"
[7] रूत ने बिनती की थी कि उसे मजदूरों के पीछे-पीछे पूलों
के बीच बिनने और बालें इकट्ठा करने दिया जाए । सुबह से
शाम तक वह काम में लगी हुयी थी। जरा सी देर ही वह
घर पर रूकी थी। [8] बोअज़ रूत से बोला, "मेरी बेटी, किसी
दूसरे के खेत में काम करने मत जाना। केवल मेरे यहाँ मेरे
मजदूरों के साथ बिनना।" [9] जिस-जिस खेत में वे जाएँ, तुम
भी वहीं जाना। मैंने जवानों से कहा है कि तुम से बातचीत न
करें। प्यास लगने पर भरे हुए पानी का इस्तेमाल कर लेना।
[10] ज़मीन तक झुक कर मुँह के बल रूत गिरी और कहा,"मुझ
परदेशिन पर आप ने कृपा क्यों दिखायी है? [11] बोअज़ बोला,
"तुम्हारे पति के मरने के बाद तुम्हारा रवैय्या सास के साथ
अच्छा रहा है। अपने माता-पिता और जन्मभूमि को तुम
ने छोड़ दिया और तुम अनजाने लोगों के बीच आ गयी हो।
यह सब मुझे पूरी तरह से मालूम है। [12] तुम्हारे किए का फल
याहवे तुम्हें दें। इसके साथ ही जिनकी शरण में तुम आयी हो,
वह इसका बदला दें।" [13] वह बोली," मेरे मालिक, आपकी
कृपा मुझ पर बनी रहे। हालाँकि आपके कर्मचारियों में से

किसी के साथ मैं बराबरी नहीं कर सकती, फिर भी आप ने मेरी हिम्मत बढ़ायी है।" 14 भोजन के समय बोअज़ ने रूत से कहा," यहाँ आओ और खाना खाओ।" रूत तभी लवने वालों के पास बैठ कर उनकी दी हुयी भुनी बालें खाने लगी। उसमें से उस ने कुछ बचा भी ली। 15 जब वह बिनने के लिए उठी, तब बोअज़ ने अपने जवानों को आदेश दिया, कि उन के पूलों के बीच-बीच उसे भी बिनने दें। यह भी कि उसकी नुक्ताचीनी न करें। 16 यह भी कि मुट्ठी भरने पर कुछ कुछ गिरा भी दें, ताकि वह बिन सके। और उसे डाँटे भी न। 17 इसलिए वह शाम तक बिनती रही, और बिने हुए को फटकारने पर एपा भर जौ निकला। 18 वापस घर जाकर उस ने आपनी सास को दिखाया। इस्तेमाल करने के बाद बचा हुआ उस ने अपनी सास को दिया। 19 उसकी सास ने पूछा, "आज तुम कहाँ बिन रही थी ? वह व्यक्ति सुखी रहे जिस ने तुम्हारा ख्याल किया।" तब रूत ने नाओमी को सब कुछ बतला दिया। 20 नाओमी ने रूत से कहा, "याहवे उस का भला करें, परमेश्वर सभी मरे हुओं पर अपनी दया करते हैं।" नाओमी ने बताया कि बोअज़ अपने ही परिवार का है और उसे हमारी ज़मीन छुड़ाने का अधिकार है। 21 रूत ने नाओमी को बताया कि बोअज़ ने उसे अपने कर्मचारियों के साथ साथ रहने को भी कहा है। ऐसा इसलिए ताकि दूसरे खेत में लोग उस से बुरा बर्ताव न करें। 22 जौ और गेहूँ दोनों की कटनी के आखिर तक बिनने के लिए बोअज़ के कर्मचारियों के साथ लगी रही थी। और वह सास के साथ ही रहा करती थी।

3 1 नाओमी ने उस से कहा, "मेरी बेटी, क्या मैं तुम्हारे लिए एक ठिकाने की न सोचूँ, ताकि तुम्हारा जीवन आराम से कटे ? 2 बोअज़, जिनके यहाँ तुम काम कर रही है, अपने घराने का ही है। आज रात को वह खलिहान में जौ फटकने आएगा। 3 तुम नहाओ, तेल लगाओ, कपड़े पहनकर खलिहान को जाओ। जब तक वह खाना खा न चुके, अपनी पहचान उसे मत बताना। 4 उसके लेटने की जगह को देख लेना। उसके लेटते ही उसके पाँव पर से चादर हटा कर लेट जाना। तब वह तुम्हें बताएगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए।" 5 रूत बोली, "आपके कहने के अनुसार मैं करूँगी।" 6 तब वह खलिहान पहुँची और जैसा सास ने कहा था, वैसा ही किया। 7 बोअज़ खाना खाने के बाद अनाज के एक सिरे पर लेट गया। रूत चुपचाप जाकर उसके पाँव की चादर हटा कर लेट गयी। 8 बीच रात में बोअज़ चौंक कर बैठ गया क्योंकि उस ने वहाँ एक महिला को लेटे पाया। 9 बोअज़ ने पूछा, "तुम कोन हो?" वह बोली, "मैं आपकी दासी रूत हूँ। आप अपनी चादर मेरे ऊपर डाल दें, क्योंकि आप हमारी ज़मीन को छुड़ाने वाले कुटुम्बी हैं।" 10 वह बोला, "बेटी, याहवे की ओर से तुम्हारा भला हो, क्योंकि तुम ने पहले से अधिक प्यार दिखाया है। तुम किसी अमीर, गरीब या किसी जवान के पीछे नहीं गयी, 11 मेरे बेटी, "डरो मत। तुम जो कुछ चाहती हो, मैं ज़रूर करूँगा। हमारे इलाके के सभी लोग जानते हैं कि तुम एक भली महिला हो। 12 निस्सन्देह मैं छुड़ाने वाला कुटुम्बी हूँ। लेकिन एक और है, जिसे मुझ से पहले छुड़ाने का अधिकार है। 13 तुम रात भर यहाँ ठहरो। सुबह यदि वह तुम्हारे लिए छुड़ाने वाले का काम करना चाहे, तो अच्छा है। यदि वह छुड़ाने वाले की भूमिका अदा न करना चाहे तो याहवे की शपथ, मैं खुद वह काम करूँगा।" 14 तब रूत रात पर वहीं टिकी रही। इसके पहले कि कोई उसे देखे, बड़े सवेरे को वह उठ गयी। बोअज़ ने उसे से कहा कि कोई न जान सके, कि खलिहान में एक महिला आयी थी। 15 तब बोअज़ ने कहा, "जो चादर तुम ओढ़े हुए हो, उसे फैलाओ और थामें रहो। "जब उस ने ऐसा किया तो उस ने जौ के छै नपुए नापकर उठा दिया। इसके बाद रूत अपने घर चली गयी।" 16 सास से मिलने पर उस ने पूछा, "क्या हुआ बेटी ?" तब सब कुछ रूत ने नाओमी को बता दिया। 17 फिर उस ने कहा,"यह जौ उस ने मुझे यह कहते हुए दिया था कि अपनी सास के पास खाली हाथ मत जाना।" 18 नाओमी बोली," मेरी बेटी, जब तक तुम्हें मालूम न पड़े कि इस बात का परिणाम कैसा होगा, तब तक खामोश रहना। इसलिए कि बोअज़ जब तक फैसला न ले ले, उसे शान्ति नहीं मिलेगी।"

4 1 तब बोअज़ फाटक के पास जाकर बैठ गया। जिस छुडाने वाले के बारे में बोअज़ ने बताया था वह भी आ गया। तब बोअज़ बोला, 'हे भाई, यहाँ आकर बैठो।" 2 तब उस ने नगर के दस बुज़ुर्ग लोगों से भी बैठने के लिए कहा। 3 तब वह उस छुड़ाने वाले कुटुम्बी से कहने लगा, "नाओमी मोआब देश से लौट कर आयी है। वह हमारे भाई एलीमेलेक की एक हिस्सा ज़मीन बेचना चाहती है, 4 इसलिए मैं चाहूँगा कि इन बुज़ुर्गों और दूसरे बैठे लोगों के सामने ज़मीन खरीद लो। यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो, तो मुझे बता दो। क्योंकि उसे छुड़ाने का अधिकार तुम्हारे बाद, मुझे है।" वह बोला कि वह छुड़ाएगा। 5 फिर बोअज़ ने कहा, "जब तुम उस ज़मीन को नाओमी से खरीदो, तब उसे रूत मोआबिन के हाथ से भी जिस का पति मर चुका है, इस विचार से खरीदना पड़ेगा, कि मरे हुए का नाम उसके हिस्से में बना रहे। 6 उस छुड़ाने वाले व्यक्ति ने कहा, "यह मुझ से नहीं हो सकेगा। मुझे डर है कि कहीं मेरा अपना हिस्सा न बिगड़ जाए। इसलिए मेरे छुड़ाने का हक तुम ले लो, क्योंकि मेरे से यह काम नहीं संभव है।" 7 सब कुछ पक्का करने के लिए, इस्त्राएल में उन दिनों एक रिवाज़ था। वह

यह कि एक व्यक्ति अपनी जूती उतार कर दूसरे को देता था।
8 इसलिए उस व्यक्ति ने अपनी जूती उतारी। 9 तब बोअज़ ने
बुज़ुर्ग लोगों और वहाँ बैठे दूसरे लोगों से कहा, "तुम सब आज
गवाह हो कि जो कुछ एलीमेलेक, किल्योन और महलोन का
था, वह सब मैं नाओमी के हाथों से खरीदता हूँ। 10 महलोन
की पत्नी रूत मोआबिन को भी मैं अपनी पत्नी करने के लिए
मंजूरी देता हूँ कि मरे हुए का नाम चला सकूँ। ताकि कहीं
ऐसा न हो कि मरे हुए का नाम उसके भाईयों के बीच से मिट
जाए।" 11 तब फाटक के पास खड़े थे सभी ने कहा, "हम गवाह
हैं।" यह महिला जो तुम्हारे यहाँ आती-जाती है, उसको याहवे,
राहेल और लिआ की तरह बढ़ाएँ करें। तुम एप्राता में वीरता
दिखाओ और बेतलेहम में तुम्हारा नाम हो। 12 जो सन्तान
याहवे इस जवान महिला के व्दारा तुम्हें दें, उसके कारण,
तुम्हारा परिवार पेरेस की तरह हो जाए, जो तामार से यहूदा
के व्दारा पैदा हुआ था। 13 बोअज़ की रूत से शादी के बाद एक
बेटा उत्पन्न हुआ। 14 वहाँ की महिलाओं ने नाओमी से कहा,
"परमेश्वर की बड़ाई हो, जिन्होंने तुम्हें छुड़ाने वाले कुटुम्बी के
बिना नहीं छोड़ा। इस्त्राएल में यह महान हो। 15 यह तुम्हें सुख
देने वाला और बुढ़ापे में देख-रेख करने वाला हो । तुम्हारी बहू
सात बेटों से बढ़कर है। उसी का यह पुत्र है।" 16 नाओमी उस
बच्चे को संभालती रही । 17 उसकी पड़ोसिनों ने उसका नाम
ओबेद रखा। ओबेद यिशै का पिता था और दाऊद का दादा
वही हुआ। 18 पेरेस की वंशावली यह है अर्थात् पेरेस से हेस्त्रोन
19 हेस्त्रोन से राम और राम से अम्मीनादाब 20 अम्मीनादाब
ने नहशोन और नहशोन से सल्मोन 21 सल्मोन से बोअज़ और
बोअज़ से ओबेद 22 ओबेद से यिशै और यिशै से दाऊद उत्पन्न
हुआ।